SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

वर्तमान युग में ई.वी रामास्वामी नायकर के विचारों की प्रासंगिकता

व्याख्या सक्सेना, राजनीति विज्ञान विभाग
स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
व्याख्या सक्सेना

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/02/2024
Revised on : -----
Accepted on : 29/04/2024
Overall Similarity : 01% on 20/04/2024

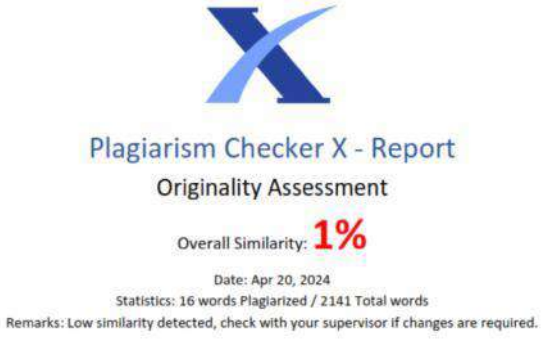

शोध सार

पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर ,जिन्हें आमतौर पर पेरियार के नाम से जाना जाता है, भारत के तमिलनाडु के एक दूरदर्शी समाज सुधारक और राजनीतिज्ञ थे। पेरियार एक सम्मानसूचक शब्द है ,जिसका अर्थ मान्यवर ,पूज्य या सम्मानित व्यक्ति होता है। उनके विचारों और सिद्धांतों ने भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य पर एक अमिट छाप छोड़ी है। दक्षिण एशिया का सुकरात ,नये युग का पैगम्बर आदि नामों से इन्हें 1970 में यूनेस्को द्वारा सम्मानित किया गया था। वर्तमान युग में पेरियार की प्रासंगिकता की जांच करने के लिए, उनके दर्शन के प्रमुख पहलुओं पर गौर करना और यह आकलन करना महत्वपूर्ण है कि वे समकालीन मुद्दों के साथ कैसे मेल खाते हैं। प्रस्तुत शोध, वर्तमान युग में पेरियार की प्रासंगिकता के विशिष्ट पहलुओं पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द

जाति उन्मूलन, सांस्कृतिक स्वायत्तता, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, धर्मनिरपेक्षता.

प्रस्तावना

पेरियार का प्राथमिक ध्यान सामाजिक असमानताओं, विशेषकर जाति व्यवस्था को मिटाने पर था। आज के भारत में, उन्नति और प्रगति के बावजूद, जाति–आधारित भेदभाव और असमानताएँ बनी हुई हैं। जातिगत पदानुक्रम के खिलाफ पेरियार की लड़ाई की प्रासंगिकता सामाजिक न्याय, सकारात्मक कार्रवाई और समावेशी नीतियों की आवश्यकता के बारे में चल रही चर्चाओं में स्पष्ट है। जाति उन्मूलन का उनका आह्वान समसामयिक बहसों में गूंजता है, समाज से गहराई तक व्याप्त पूर्वाग्रहों का सामना करने और उन्हें खत्म करने का आग्रह करता है।

उन्होंने कहा कि "कोई भी विरोध जो तर्कवाद,

विज्ञान या अनुभव पर आधारित नहीं है, एक या दूसरे दिन धोखाधड़ी, स्वार्थ, झूठ और साजिशों को उजागर करेगा।"[1]

इसके अलावा, महिलाओं के अधिकारों के लिए पेरियार की वकालत अत्यधिक प्रासंगिक बनी हुई है। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और समान अधिकारों का समर्थन किया। वर्तमान युग में, लैंगिक असमानता विश्व स्तर पर बनी हुई है, और पेरियार के सिद्धांत लैंगिक न्याय, सशक्तिकरण और पितृसत्तात्मक संरचनाओं को खत्म करने की वकालत करने वाले आंदोलनों को प्रेरित करते रहे हैं। पेरियार बुद्धिवाद और वैज्ञानिक सोच के कट्टर समर्थक थे। ऐसे युग में जहां गलत सूचना और अंधविश्वास अभी भी समाज को परेशान कर रहे हैं, तर्क, वितर्क और वैज्ञानिक स्वभाव पर उनका जोर आलोचनात्मक सोच के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। छद्म वैज्ञानिक मान्यताओं और प्रतिगामी प्रथाओं के सामने, तर्कसंगत विश्वदृष्टिकोण के लिए पेरियार का आह्वान एक मार्गदर्शक प्रकाश बना हुआ है। पेरियार के नेतृत्व में द्रविड़ आंदोलन का उद्देश्य द्रविड़ लोगों की सांस्कृतिक पहचान पर जोर देना था जबकि सांस्कृतिक पहचान की गतिशीलता विकसित हुई है, क्षेत्रीयता, भाषाई गौरव और सांस्कृतिक विविधता से संबंधित मुद्दे कायम हैं। सांस्कृतिक स्वायत्तता और आत्मनिर्णय के अधिकार पर पेरियार का जोर वैश्वीकरण के सामने विविध सांस्कृतिक पहचानों के संरक्षण के बारे में चर्चा में प्रतिध्वनित होता है।

पेरियार का प्रभाव तमिलनाडु तक ही सीमित नहीं है; उनके विचारों ने पूरे भारत में सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और मानवाधिकारों पर चर्चा की है। पेरियार की विरासत भौगोलिक सीमाओं से परे फैली हुई है, जो उन व्यक्तियों और आंदोलनोंको प्रभावित करती है जो अधिक समतापूर्ण और न्यायपूर्ण समाज के लिए प्रयास करते हैं।

समकालीन भारत में, जहां सामाजिक न्याय और समानता पर बहस चल रही है, पेरियार का दर्शन एक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करता है। निम्नलिखित अनुभाग वर्तमान युग में पेरियार के विचारों की प्रासंगिकता को सही सिद्ध करते हैं:

1. जाति उन्मूलनः एक सतत् संघर्ष

जाति भेद को मिटाने के प्रति पेरियार की अटूट प्रतिबद्धता उनकी सक्रियता का केंद्रीय विषय थी। संवैधानिक प्रावधानों और सकारात्मक कार्रवाई नीतियों के बावजूद, जाति–आधारित भेदभाव और पूर्वाग्रह विभिन्न रूपों में मौजूद हैं। हाल ही में सामाजिक न्याय पर चर्चा का पुनरुत्थान, विशेष रूप से आरक्षण के संदर्भ में, पेरियार के दृष्टिकोण की स्थायी प्रासंगिकता को दर्शाता है।

भारत का जटिल सामाजिक ताना–बाना छुआछूत, अंतरजातीय विवाह और भेदभाव के मुद्दों से जूझ रहा है। समाज के आमूलचूल पुर्नगठन के लिए पेरियार का आह्वान, जहां जाति की पहचान का कोई महत्व नहीं है, ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों और सम्मान की वकालत करने वाले समकालीन आंदोलनों के साथ प्रतिध्वनित होता है। पेरियार की प्रासंगिकता न केवल जाति की प्रकट अभिव्यक्तियों को बल्कि भेदभाव को कायम रखने वाली अंतर्निहित मानसिकता को भी खत्म करने के उनके आग्रह में निहित है।

पेरियार का मानना था कि कुछ चालाक लोगों ने भारतीय समाज पर हावी होने के लिए जातिगत भेदभाव पैदा किया, इसलिए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि व्यक्तियों को पहले आत्म–सम्मान विकसित करना चाहिए और तर्कसंगत रूप से प्रस्तावों का विश्लेषण करना सीखना चाहिए। पेरियार के अनुसार, एक स्वाभिमानी तर्कवादी को तुरंत एहसास होगा कि जाति व्यवस्था उसके आत्मसम्मान का गला घोंट रही है और इसलिए वह इस खतरे से छुटकारा पाने का प्रयास करेगा।[3]

सामाजिक न्याय पर समकालीन विमर्श अक्सर जाति के उन्मूलन के लिए पेरियार के आह्वान को प्रतिध्वनित करता है। दलितों और अन्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों के हितों की वकालत करने वाले आंदोलन और व्यक्ति पेरियार के समतावादी समाज के निरंतर प्रयास से प्रेरणा लेते हैं। उनके विचारों की प्रासंगिकता इस तथ्य से रेखांकित होती है कि, कुछ क्षेत्रों में प्रगति के बावजूद, गहरी जड़ें जमा चुके जातिगत पूर्वाग्रह सामाजिक संबंधों और अवसरों को आकार दे रहे हैं।

2. महिला अधिकारः एक बारहमासी संघर्ष

पेरियार उस समय महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने में अग्रणी थे जब सामाजिक मानदंडों ने महिलाओं को अधीनस्थ भूमिकाओं में धकेल दिया था। शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और महिलाओं के लिए समान अधिकारों जैसे मुद्दों पर उनके प्रगतिशील रुख ने बाद के नारीवादी आंदोलनों के लिए आधार तैयार किया। वर्तमान युग में, महिलाओं को लिंग आधारित हिंसा, असमान वेतन और विभिन्न क्षेत्रों में सीमित प्रतिनिधित्व से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

"उन्होंने महिलाओं के लिए शुद्धता के पाखंड की आलोचना की और तर्क दिया कि इसे या तो पुरुषों पर भी लागू होना चाहिए, या दोनों लिंगों के लिए बिल्कुल भी नहीं।"[2]

महिलाओं के अधिकारों पर पेरियार के विचारों की प्रासंगिकता उन चल रहे आंदोलनों में स्पष्ट है जो पितृसत्तात्मक संरचनाओं को खत्म करने और महिलाओं को सशक्त बनाने की मांग करते हैं। सामाजिक प्रगति के साधन के रूप में महिलाओं की शिक्षा पर उनका जोर शिक्षा और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाली पहलों के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बना हुआ है। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भागीदारी के लिए पेरियार का आह्वान कार्यस्थल विविधता और महिलाओं की नेतृत्व भूमिकाओं के बारे में समकालीन बहसों में गूंजता है।

जबकि महिलाओं के अधिकारों को आगे बढ़ाने में प्रगति हुई है, पेरियार की पूर्ण लैंगिक समानता की दृष्टि अभी भी पूरी तरह से साकार नहीं हुई है। लिंग आधारित हिंसा, भेदभावपूर्ण सामाजिक मानदंड और लगातार लिंग वेतन अंतर जैसे मुद्दे एक ऐसे समाज के लिए पेरियार की वकालत की निरंतर प्रासंगिकता को उजागर करते हैं जहां महिलाओं को समान अवसर मिलते हैं और दमनकारी मानदंडों से मुक्त होते हैं।

3. सूचना के युग में बुद्धिवाद

पेरियार तर्कवाद और वैज्ञानिक सोच के प्रबल समर्थक थे। ऐसे समय में जब छद्म वैज्ञानिक मान्यताएं और अंधविश्वास प्रचलित थे, उन्होंने सामाजिक प्रगति के लिए तर्क और तर्क को उपकरण के रूप में समर्थन दिया। वर्तमान युग में, जिसमें सूचना और गलत सूचना का विस्फोट हो रहा है, पेरियार का तर्कसंगतता और वैज्ञानिक स्वभाव पर जोर पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

विभिन्न स्रोतों से प्रेरित गलत सूचना का प्रसार, आलोचनात्मक सोच में पारंगत जनता की आवश्यकता को रेखांकित करता है। पेरियार का दर्शन व्यक्तियों को हठधर्मिता पर सवाल उठाने, प्रतिगामी प्रथाओं को चुनौती देने और साक्ष्य–आधारित तर्क को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। ऐसे युग में जहां फर्जी खबरें और गलत सूचनाएं गहरा सामाजिक प्रभाव डाल सकती हैं, वैज्ञानिक रूप से सूचित नागरिक वर्ग के लिए पेरियार के आह्वान का महत्व नए सिरे से बढ़ गया है।

"उनके चिंतन का मुख्य विषय समाज था, फिर भी उनके विचार और दृष्टिकोण राजनीति एवं आर्थिक क्षेत्र में परिलक्षित होते हैं, उनका अटूट विश्वास था कि सामाजिक मुक्ति ही राजनैतिक एवं आर्थिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगी। उनकी इच्छा थी कि अंग्रेजों के भारत छोड़ने से पहले ही सामाजिक समानता स्थापित हो जानी चाहिए। अन्यथा स्वाधीनता का यह अभिप्राय होगा कि हमने विदेशी मालिक की जगह भारतीय मालिक को स्वीकार कर लिया है। उनका सोचना था कि यदि इन समस्याओं का समाधान स्वाधीनता प्राप्ति के पहले नहीं किया गया, तो जाति व्यवस्था और उनकी बुराइयां हमेशा बनी रहेंगी। उनका कहना था कि राजनैतिक सुधार से पहले सामाजिक सुधार होना चाहिए।"[4]

वैज्ञानिक समुदाय साक्ष्य–आधारित निर्णय लेने के महत्व पर जोर देना जारी रखता है, और पेरियार की विरासत वैज्ञानिक साक्षरता और आलोचनात्मक जांच को बढ़ावा देने के व्यापक लक्ष्यों के साथ संरेखित होती है। छद्म विज्ञान और तर्कहीन मान्यताओं से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करते हुए, पेरियार के तर्कवादी सिद्धांत एक समझदार और सूचित दृष्टिकोण के साथ जटिल मुद्दों को सुलझाने के लिए एक मजबूत रूपरेखा प्रदान करते हैं।

4. सांस्कृतिक पहचान और आत्मनिर्णय

पेरियार के नेतृत्व में द्रविड़ आंदोलन ने कथित आर्य प्रभुत्व के सामने द्रविड़ लोगों की सांस्कृतिक पहचान पर जोर देने की कोशिश की, जबकि सांस्कृतिक पहचान की गतिशीलता विकसित हुई है, क्षेत्रीयता, भाषाई गौरव और सांस्कृतिक विविधता के बारे में चर्चा जारी है। सांस्कृतिक स्वायत्तता और आत्मनिर्णय के अधिकार पर पेरियार का जोर वैश्वीकरण के युग में विविध सांस्कृतिक पहचानों के संरक्षण के संदर्भ में प्रासंगिकता रखता है।

"पेरियर का मानना था कि आत्म–स्वतंत्रता वह है जहाँ सच्ची स्वतंत्रता पाई जाती है। भारत राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए लड़ रहा था, लेकिन उस स्वतंत्रता ने विधवाओं को पुनर्विवाह करने या बिना दंड के अपनी पसंद के साथी से शादी करने की अनुमति नहीं दी. इन्हीं अधिकारों के लिए स्वाभिमान आन्दोलन लड़ा।[5]

ऐसी दुनिया में जहां वैश्वीकरण कभी–कभी संस्कृतियों के समरूपीकरण को जन्म दे सकता है, अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान को पहचानने और संरक्षित करने के महत्व को तेजी से स्वीकार किया जा रहा है। द्रविड़ लोगों की सांस्कृतिक स्वायत्तता के लिए पेरियार की वकालत सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करने और जश्न मनाने की आवश्यकता के बारे में व्यापक चर्चा के साथ संरेखित है।

पेरियार के विचारों का प्रभाव तमिलनाडु से परे तक फैला हुआ है, जो उन आंदोलनों को प्रभावित करता है जो क्षेत्रीय पहचान पर जोर देते हैं और स्वायत्तता की मांग करते हैं। भाषा अधिकारों, सांस्कृतिक संरक्षण और क्षेत्रीय स्वायत्तता के बारे में चल रही बहसें आत्मनिर्णय और सांस्कृतिक गौरव के लिए पेरियार के आह्वान को प्रतिध्वनित करती हैं। इस अर्थ में, उनके विचार वैश्वीकृत दुनिया में सांस्कृतिक पहचान की जटिलताओं को समझने और नेविगेट करने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र में पेरियार के चिंतन एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता को समझने का प्रयास किया गया है। पेरियार ने अपने क्रांतिकारी विचारो से राष्ट्रीय परिवेश पर भी प्रभाव डाला, दक्षिण भारत में पेरियार ने जो संघर्ष किया, आज भी प्रासंगिक है, उनके द्वारा चलाये गये, आत्मसम्मान आंदोलन से मानवीय गरिमा को बढ़ावा मिला। उन्होंने सदैव पूर्ण लैंगिक समानता पर जोर दिया, "पेरियार की आपत्ति यह थी कि पवित्रता का यह बंधन अकेले स्त्री को ही क्यों वहन करना पड़ता है, पुरूष के लिए यह मानक लागू क्यों नहीं किया जाता है। स्त्री पुरुष के बीच के संबंध को शास्त्र नहीं, प्रेम के संदर्भ में परिभाषित करते है।"[6]

उनका चिंतन संपूर्ण भारत में सामाजिक न्याय ,मानवाधिकार, धर्मनिरपेक्षता, लैंगिक समानता, सांस्कृतिक संरक्षण पर चर्चा को सदैव प्रभावित करता रहेगा। यूनेस्को ने अपने उद्धरण में उन्हें 'नए युग का पैगम्बर, दक्षिण पूर्व एशिया का सुकरात, समाज सुधार आन्दोलन का पिता, अज्ञानता, अंधविश्वास और बेकार के रीति–रिवाज़ का दुश्मन' कहा। पेरियार का भविष्य की दुनिया का सपना मार्क्स–एंगेल्स के साम्यवाद के सपने से मेल खाता है. अपने लेख 'भविष्य की दुनिया' में अपने आदर्श समाज की परिकल्पना प्रस्तुत करते हुए उन्होंने तमिल पुस्तक इनि वारुम उल्लगम में लिखाः

"नए विश्व में किसी को कुछ भी चुराने या हड़पने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी. पवित्र नदियों जैसे कि गंगा के किनारे रहने वाले लोग उसके पानी की चोरी नहीं करेंगे। वे केवल उतना ही पानी लेंगे, जितना उनके लिए आवश्यक है। भविष्य के उपयोग के लिए वे पानी को दूसरों से छिपाकर नहीं रखेंगे। यदि किसी के पास उसकी आवश्यकता की वस्तुएं प्रचुर मात्रा में होंगी, तो वह चोरी के बारे में सोचेगा तक नहीं। इसी प्रकार किसी को झूठ बोलने, धोखा देने या मक्कारी करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी. क्योंकि, उससे उसे कोई प्राप्ति नहीं हो सकेगी. नशीले पेय किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे, न कोई किसी की हत्या करने का ख्याल दिल में लाएगा. वक्त बिताने के नाम पर जुआ खेलने, शर्त लगाने जैसे दुर्व्यसन समाप्त हो जाएंगे। उनके कारण किसी को आर्थिक बरबादी नहीं झेलनी पड़ेगी।"[7]

संदर्भ सूची

1. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Periyar#cite_ref-Veeramani-1.3_69-1 8, Assess on 12.02.2024.
2. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Periyar#cite_ref-Veeramani-1.3_69-1 8, Assess on 12.02.2024.
3. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Periyar#cite_ref-Veeramani-1.3_69-1 8, Assess on 12.02.2024.
4. भारत के सुकरात पेरियार का जीवन परिचय – Forward Press.html, Assess on 12.02.2024.
5. पेरियार की विरासत और आत्म–सम्मान आंदोलन का इतिहास – तमिलनाडु समाज सुधार.html, Assess on 13.02.2024.
6. Unit-9 - E. RAMASWAMY NAICKER, NAZRUL ISLAM, PANDITA RAMABAI, JAIPAL SINGH, KAHN SlNGH ####### - Studocu.html, Assess on 13.02.2024.
7. Reading Periyar today _ The Caravan.html, Assess on 13.02.2024.
8. स्वामी पेरियार और उनकी सच्ची रामायण (R).pdf, Assess on 13.02.2024.
9. सामाजिक संस्थाएँ निरंतरता एवं परिवर्तन.pdf, Assess on 13.02.2024.
10. https://ncert.nic.in/ncerts/l/hhss203.pdf, Assess on 13.02.2024.
11. The Symbol of Knowledge_ 2018.html, Assess on 13.02.2024.
12. पेरियार ई वी रामास्वामी नायकर का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनका भाषण – YouTube.html, Assess on 13.02.2024.

****